Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 7, July - 2023 Publication Date: 10/07/2023

DOIs:10.2018/SS/202307001 --:-- Research Paper / Article / Review

वेदांत दर्शन तथा शिक्षा का संबंध

अजय कुमार मौर्य, डॉ. मुहम्मद जावेद प्राधयपक
[1]शोधकर्ता, शिक्षा संकाय आई0 आई0 एम0 टी0, विश्वविद्यालय, मेरठ, उ0प्र0,
सहायक प्रपध्यापक, बसुन्धरा टीचर्स टेनिंग कालेज, मुजफ्फरपुर, बिहार
ईमेल - ajaymaurya44037@gmail.com

[2] शोध निदंशक, शिक्षा संकाय आई0 आई0 एम0 टी0 , विश्वविद्यालय, मेरठ।

सारांश : भारत में शिक्षा पर स्वतन्त्र रूप से विचार करना आधुनिक युग की देन है। इससे पूर्व के विचारक तो मनुष्य के जीवन पर समग्र रूप से विचार करते थे। शिक्षा द्वारा मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन किए जा सकते है। वेदांत दर्शन में मनुष्य जीवन के दो पक्ष माने हैं-एक अपरा (व्यावहारिक) और दूसरा परा (आध्यात्मिक)। शिक्षा के द्वारा मनुष्य के दोनों पक्षों का विकास किया जा सकता है। व्यावहारिक पक्ष में मनुष्य के शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक विकास के साथ-साथ उसके वर्ण-कर्म की शिक्षा को सम्मिलित किया है और आध्यात्मिक पक्ष (मुक्ति) के लिए ज्ञान को आवश्यक माना है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा वेदांत दर्शन तथा शिक्षा के मध्य संबंध पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्दः वेदांत दर्शन, शिक्षा, वेद, उपनिषद् ।

1. प्रस्तावना :

मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है जब मनुष्य एक छोटे से भ्रूण के रूप में जन्म लेता है और क्रमशः वृद्धि तथा विकास के द्वारा उत्पन्न होकर शिशु, बालक, किशोर, और वयस्क अवस्थाओं में विकसित होकर जीवन यापन करता है तो जीवन के एक-एक क्षण का अनुभव उसके ज्ञान को बढ़ाता है और प्रत्येक घटना से शिक्षा ग्रहण करता है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है अर्थात यह एक सतत प्रक्रिया है जो गर्भाधान से लेकर जीवन के अंत तक चलती रहती है। प्रकृति के प्रत्येक तत्व से हमारे मन में नए-नए विचार जन्म लेते रहते हैं और हम उनके बारे में चिंतन करते हैं इसी का नाम शिक्षा है। मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्त्व है। शिक्षा ही वह आभूषण है जो मनुष्य को सभ्य एवं ज्ञानवान बनाता है, अन्यथा शिक्षा के बगैर मनुष्य को पशु के समान माना गया है। शिक्षा के महत्व को समझते हुए ही प्रायः शैक्षणिक गतिविधियों को वरीयता दी जाती है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली स्कूल, कॉलेजों पर केंद्रित एक व्यवस्थित प्रणाली है। साथ ही, कक्षा 1 से 10 तक के छात्र उदाहरणों के साथ इस पृष्ठ से विभिन्न हिंदी निबंध विषय पा सकते हैं। भारत की जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली है, वह प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली से मेल नहीं खाती है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली का ढाँचा औपनिवेशिक है, जब कि प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली गुरुकुल आधारित थी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली एक संशोधित एवं अद्यतन शिक्षा प्रणाली तो है ही यह ज्ञान-विज्ञान के नए-नए विषयों को भी समाहित करती है। कंप्यूटर शिक्षा इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है जिसने मानव जीवन को सहज, सुंदर एवं सुविधाजनक बनाया है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में “अ” प्रत्यय लगाने से बना है। शिक्ष् का अर्थ है ‘सीखना एवं सिखाना’। समस्त संसार शिक्षा का क्षेत्र और प्रत्येक व्यक्ति ;बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुषद्ध सभी शिक्षार्थी हैं। वे सब जीवनपर्यन्त कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। अतः व्यक्ति का सारा जीवन काल उसका शिक्षा काल होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति जहाँ स्वयं दूसरे से सीखता है वहाँ दूसरे को भी कुछ न कुछ शिक्षा देता है। शिक्षा ज्ञान रूपी प्रकाश का स्रोत है। जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ - प्रदर्शक है। शिक्षा के द्वारा हमारे संशयों का उन्मूलन एवं कठिनाइयों का निवारण होता है तथा विश्व को समझने की क्षमता प्राप्त होती है। ”ज्ञान तृतीय मनुजस्य नेत्रं समस्त तत्वार्थ विलोक दक्षम”। अर्थात दो नेत्रों के देखने से जो अपूर्ण रह जाता है वह विद्या रूपी तृतीय नेत्र से देखा जा सकता है। उदाहरण स्वरूप एक वनस्पति विज्ञानी, कवि तथा अनपढ़ तीनों ही फूलों को देखा करते हैं परन्तु तीनों के देखने में अंतर है। बिना विद्या के मनुष्य और पशु में कोई अंतर नहीं। “विद्या विहीन पशु समानः” अर्थात विद्या से ही मानवता के गुणों का विकास संभव है नहीं तो मनुष्य पशु का पशु ही रह जाएगा, जिसका उद्देश्य मात्र उदरपूर्ति होता है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा :

रंजय कुमार पटेल (2021) ने अपने अध्ययन शैक्षिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में मीमांसा दर्शन की उपादेयता में संस्कृत साहित्य के आधार पर मीमांसा दर्शन के सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है। अध्ययन के निष्कर्षो के अनुसार दर्शन ही शिक्षा के लक्ष्यों, पाठ्यक्रमों एवं उपयोगी शिक्षण विधियों को निर्धारित करता है। दर्शन की सहायता के बिना कोई भी शैक्षिक योजना सफल नहीं हो सकती है। इसी के साथ प्राचीन समय से ही भौतिक जीवन की तुलना में दार्शनिक जीवन को श्रेष्ठ माना जाता रहा है। शिक्षा और दर्शन का एक ही लक्ष्य है मानव जीवन की उन्नति करना है। अतः उपरोक्त इन सन्दर्भों की दृष्टि से मीमांसा दर्शन की उपादेयता स्वयं सिद्ध होती है। गोर्डाना स्टेनकोवस्का, सलागाना एंजेलकोस्का और स्वेतलाना पांडिलोस्का ग्रनकारोस्का (2009) प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का मौलिक अधिकार है और उसे सीखने का एक स्वीकार्य स्तर हासिल करने और उसे आगे बढ़ाने का अवसर दिया जाना चाहिए। प्रत्येक बच्चे में अद्वितीय विशेषताएं, रुचियां, क्षमताएं और सीखने की आवश्यकताएं होती हैं। इसलिए शैक्षिक प्रणाली को उचित रूप से डिजाइन किया जाना चाहिए और शैक्षिक कार्यक्रमो को इन विशेषताओं और आवश्यकताओं की व्यापक विविधता को ध्यान में रखते हुए लागू किया जाना चाहिए। मास्लो (1943) मनुष्य लक्ष्य प्राप्ति से प्रेरित होता है। लक्ष्यों को प्राप्त करने से मनुष्य अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। आवश्यकताओं को महत्व के क्रम में मानसिक रूप से प्राथमिकता दी जाती है। अधिक महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने से पहले कम तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। किसी व्यक्ति के कार्यों को निम्न-प्राथमिकता वाली आवश्यकताओं को पूरा करने पर केंद्रित होना चाहिए तत्पश्चात उच्च-प्राथमिकता वाली आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।

3. अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है-

वेदांत दर्शन का अध्ययन करना।

वेदांत दर्शन और शिक्षा के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

4. वेदांत दर्शन :

वेदांत दर्शन हिंदू दर्शन के 6 महान विद्यालयों में से एक है। हिंदू दर्शन के विद्यालय हिंदुत्व को प्रोत्साहित करते हैं। वेदांत एक दर्शन है अर्थात एक विचारधारा है जिसमें उपनिषद में उठाए गए जीवन से संबंधित सवालों के उत्तर ढूंढने का जो प्रयास किया गया है वर्णित है। आध्यात्मिक चिंतन में वेदांत-सूत्रों का एक अमूल्य स्थान है। वेदांत-सूत्रों की रचना का कार्य आचार्य बादरायण द्वारा संपन्न किया गया। आचार्य बादरायण का असली नाम वेदव्यास था। वेदव्यास जी का नाम बादरायण बदरी वन से लक्षित प्रदेश में निवास के कारण पड़ा। वेदांत का आधार उपनिषद, ब्रह्म-सूत्र एवं गीता को माना गया है। वेदांता का शाब्दिक अर्थ है वेद का अंत। वेदांत दो शब्दों से मिलकर बना है, वेद और अंत।

वेद $ अंत = वेदांत

यहां वेद का अर्थ है ज्ञान तथा अंत का अर्थ है उपसंहार। अतः वेदांत का अर्थ है अंतिम ज्ञान की प्राप्ति करना। जिसने वेदांत के ज्ञान की प्राप्ति कर ली, उसके बाद उसे किसी भी ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। वेदांत को श्रुति भी कहा जाता है। आधुनिक भारतीयों के अनुसार व्यास-सूत्र को ही वेदांत का आधार माना जाता है। वेदांत की उत्पत्ति उपनिषद से हुई है तथा वेदों में उसका अंत हुआ है।

हम यह मान सकते हैं कि वेदांत दर्शन का जन्म उपनिषद से हुआ। उपनिषद का अर्थ हुआ कोने में बैठकर कुछ जानना। उपनिषद में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य की वार्ता का वर्णन है। उपनिषद के अंदर कुछ ऐसे प्रश्न पूछे गए हैं जिनके उत्तर ढूंढ पाना बहुत मुश्किल कार्य है, जैसे मैं कौन हूं, ऐसी कौन सी चीज है जो कभी नष्ट नहीं हो सकती आदि। कुल 108 उपनिषद है तथा इन उपनिषदों में इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर ढूंढने का प्रयास किया गया है।

उपनिषद में जो प्रश्न उठाए गए उनके उत्तरों को खोजने के लिए जो प्रयास किए गए वह वेदांत है। वेदांत में जो चीजें बदलती रहती हैं उन्हें माया कहा जाता है, जैसे, शरीर, मस्तिष्क आदि। अतः वे चीजें जो बदलती रहती हैं, एक तरह की माया है एक तरह का भ्रम है, वेदांता का यह मानना है कि ब्रह्म आपके स्वयं के अंदर है।

ब्रह्म का अर्थ है आत्मा। आत्मा जो सदैव एक रहती है जिसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता। आत्मा ब्रह्मा का हिस्सा है। जब इस प्रकार की सत्य की प्राप्ति होती है तो मनुष्य हर प्रकार की मोह-माया से मुक्त हो जाता है। वेदांता में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य या लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करना है। वेदांत दर्शन का लक्ष्य है कि शिक्षक या शिक्षार्थी इस सांसारिक मोह-माया से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाएं अर्थात वह मोक्ष की प्राप्ति कर लें।

वेदान्त ज्ञानयोग का एक स्रोत है जो व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति की दिशा में उत्प्रेरित करता है। इसका मुख्य स्रोत उपनिषद है जो वेद ग्रंथो और वैदिक साहित्य का सार समझे जाते हैं। उपनिषद् वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है, इसीलिए इसको वेदान्त कहते हैं। कर्मकाण्ड और उपासना का मुख्यतः वर्णन मंत्र और ब्राह्मणों में है, ज्ञान का विवेचन उपनिषदों में। आरम्भ में उपनिषदों के लिए 'वेदान्त' शब्द का प्रयोग हुआ किन्तु बाद में उपनिषदों के सिद्धान्तों को आधार मानकर जिन विचारों का विकास हुआ, उनके लिए भी 'वेदान्त' शब्द का प्रयोग होने लगा। उपनिषदों के लिए ''वेदान्त'' शब्द के प्रयोग के प्रायः तीन कारण दिये जाते हैं:-

उपनिषद् 'वेद' के अन्त में आते हैं। 'वेद' के अन्दर प्रथमतः वैदिक संहिताएँ- ऋक्, यजुः, साम तथा अथर्व आती हैं और इनके उपरान्त ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् आते हैं। इस साहित्य के अन्त में होने के कारण उपनिषद् वेदान्त कहे जाते हैं।

वैदिक अध्ययन की दृष्टि से भी उपनिषदों के अध्ययन की बारी अन्त में आती थी। सबसे पहले संहिताओं का अध्ययन होता था। तदुपरान्त गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने पर यज्ञादि गृहस्थोचित कर्म करने के लिए ब्राह्मण-ग्रन्थों की आवश्यकता पड़ती थी। वानप्रस्थ या संन्यास आश्रम में प्रवेश करने पर आरण्यकों की आवश्यकता होती थी, वन में रहते हुए लोग जीवन तथा जगत् की पहेली को सुलझाने का प्रयत्न करते थे। यही उपनिषद् के अध्ययन तथा मनन की अवस्था थी।

(उपनिषदों में वेदों का 'अन्त' अर्थात् वेदों के विचारों का परिपक्व रूप है। यह माना जाता था कि वेद-वेदांग आदि सभी शास्त्रों का अध्ययन कर लेने पर भी बिना उपनिषदों की शिक्षा प्राप्त किये हुए मनुष्य का ज्ञान पूर्ण नहीं होता था।

आचार्य उदयवीर शास्त्री के अनुसार 'वेदान्त' पद का तात्पर्य है-

''वेदादि में विधिपूर्वक अध्ययन, मनन तथा उपासना आदि के अन्त में जो तत्त्व जाना जाये उस तत्त्व का विशेष रूप से यहाँ निरूपण किया गया हो, उस शास्त्र को 'वेदान्त' कहा जाता है''।

4.1 वेदांत दर्शन की विशेषताए

ब्रम्ह ही सत्य हैं।

जगत मिथ्या पर सत्य है।

माया ब्रम्ह की शक्ति और जगत की सृष्टि करने वाली है।

जीव स्थूल शरीरधारी एक व्यक्ति है जिसकी समष्टि ईश्वर हैं।

सृष्टि किया अक्षर ब्रम्ह की स्वाभाविक लीला रूप सूक्ष्म किया है।

वेदांत दर्शन का विश्वास पुनजम में पाया जाता है।

वेदांत दर्शन मोक्ष या मुक्ति को अंति म लक्ष्य मानता है।

परमात्मा की प्राप्ति का हेतु ब्रम्ह ज्ञान ही हैं।

कर्मनिष्ठ और ज्ञान निष्ठ मे समुच्चय पाया जाता है।

सत्य त्रिकालावाधित होता है।

सत्ता त्रिविधि होती हैं।

4.2 वेदान्त दर्शन और शिक्षा

वेदांत सम्प्रदाय के दर्शन का आधार वेद तथा उपनिषद् हैं। इसकी मान्यता है कि मानव अपने वर्तमान के कर्म तथा पूर्व के कर्म से नियंत्रित रहता है। धर्म ही केवल मानव को ब्रम्हाण्ड मे संपोषित रखता है। अविद्या मानव को माया के जाल मे बाँध देती हैं। जो कि मानव के दुःख और वेदना का कारण है। वह इनसे बच सकता है तथा अपने को जान सकता है विराग की भावना को अपना कर और

ज्ञान को प्राप्त करके। मानव का उद्धार शाश्वत तथा नश्वर मे विभेद समझकर ही हो सकता है। वेदांत केवल सैंद्धातिक दर्शन नही है। यह एक सम्पूर्ण या आदर्श मानव बनने के लिए पथ प्रदर्शिका प्रदान करता है। यह पथ प्रदर्शिका व्यक्ति को यह निर्देश देती है कि वह क्या सीखे और कैसे उसे सीखे। एक व्यक्ति जो उनका अनुसरण करता है उसे हम वेदांत दर्शन के अनुसार आदर्श शिक्षित व्यक्ति कह सकते है।

4.3 वेदांत दर्शन में शिक्षा के उद्देश्य

वेदांत दर्शन में शिक्षा के मुख्य दो उद्देश्य बताये गए हैं, जो निम्न् हैं -

परा उद्देश्य - परा उद्देश्य का मुख्य उद्देश्य है मुक्ति अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करना।

अपरा उद्देश्य - अपरा उद्देश्य में परा उद्देश्य को प्राप्त करने के मार्ग बताए गए हैं।

अपरा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्न उपाय बताये गए हैं -

शारीरिक विकास- मोक्ष की प्राप्ति के लिए मनुष्य को अपना शारीरिक विकास एवं शुद्धिकरण करना होता है। हमारे जितने भी दर्शन हैं उन सब में शारीरिक विकास को बढ़ावा दिया गया है। सभी दर्शन में बालक का शारीरिक विकास बहुत महत्वपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति को जिंदगी में कुछ भी हासिल करना हो तो सर्वप्रथम उसको शरीर से मजबूत होना आवश्यक है। वेदांत दर्शन के अंतर्गत केवल मनुष्य के शारीरिक विकास की ही बात नहीं की जाती अपितु इसके साथ साथ उसके शुद्धीकरण को भी महत्वता दी जाती है।

मानसिक विकास- बालक के मानसिक स्तर को बढ़ाना पड़ेगा ताकि वह सच्चे ज्ञान को प्राप्त कर सके जिसकी सहायता सेवा परम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें।

नैतिक विकास- एक रात में जो कि ब्रह्मा का हिस्सा है तथा कर्मों में फंस गई है, कर्मों का तात्पर्य हुआ हर प्रकार के कार्य करना चाहे अच्छे हो या बुरे। अपने द्वारा किए गए कर्मों के फल को पाने के लिए आत्मा को जीवन मरण के चक्र में बंधे रहना पड़ता है। नैतिक विकास के लिए मानसिक शुद्धता होना आवश्यक है।

व्यवसायिक शिक्षा- जीविकोपार्जन के लिए व्यवसायिक शिक्षा आवश्यक है। मनुष्य को जीविकोपार्जन के लिए अपने कौशल का विकास करना होता है। वेदांत का मानना है कि मनुष्य अपने मूल आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके जिसका एकमात्र उपाय है, जीविकोपार्जन के लिए व्यवसायिक शिक्षा की सुविधा।

आध्यात्मिक विकास- आध्यात्मिक विकास के लिए मनुष्य ऐसी कर्मों की ओर अग्रसर होगा जिसकी सहायता से वह ब्रह्मा से जुड़ सकें।

4.4 वेदांत दर्शन का पाठ्यक्रम

वेदांत अपनी पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार से करती है जिसकी सहायता से मनुष्य या बालक ब्रह्मा को पा सके, अर्थात मुक्ति को प्राप्त हो सके। वेदांता के पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बालक को मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग का ज्ञान देना है। वेदांता के पाठ्यक्रम को निम्न दो भागों में विभाजित किया गया है-

परा विद्या (अध्यात्म से संबंधित विद्या)

साहित्य का अध्ययन

दर्शन का अध्ययन

धार्मिक ज्ञान- उपनिषद, ब्रह्म सूत्र, भगवत गीता, वेद

अध्यात्म से संबंधित कुछ व्यवहारिक गतिविधियां- योग (अष्टांगिक मार्ग- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहारा, धारणा, ध्यान, समाधि) मन, मस्तिष्क एवं शरीर के मध्य एक सामंजस्य स्थापित करने हेतु। योग का अर्थ हुआ सही राह पर चलना।

कर्म योग- इस प्रकार के कर्म करने है जो मोक्ष की और ले जाए।

ज्ञान योग- सही ज्ञान प्राप्त करना

राज योग- राजयोग सभी योगों का राजा कहलाता है। इस योग में सभी प्रकार के योगों की कोई न कोई अनुभूति अवश्य हो जाती है।

भक्ति योग- औरों के लिए अच्छी अनुभूति या भाव प्रकट करना।

अपरा विद्या (वास्तविक जीवन अर्थात दुनिया से संबंधित विद्या)

भाषाएं,

गणित

व्यवसायिक शिक्षा

वैद्यक शास्त्र

5. शिक्षण की विधियां :

ज्ञान प्राप्त करने की अवस्थाएं निम्न हैं:

श्रवण - शिक्षकों को सुनना

मनन - ज्ञान के बारे में सोचना, स्वाध्याय करना।

निधि ध्यासन - प्राप्त किए गए ज्ञान को अपने व्यवहार में लाना। दैनिक क्रिया में उसका प्रयोग करना। निधि ध्यान सन मोक्ष की प्राप्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जब बालक ज्ञान का प्रयोग अपने जिंदगी में इस्तेमाल करना तथा ज्ञान की सहायता से अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना निधि दर्शन है।

6. वेदांत आधरित शिक्षा के उद्देश्य :

वेदांत के अनुसार वर्तमान में शिक्षा के निम्ननिखित उद्देश्य होने चाहिए

शिक्षा का अंतिम उद्देश्य बच्चे को ब्रह्म की प्राप्ति के लिए तैयार करना है।

शिक्षा का उद्देश्य आत्म-पूर्ति करना और भौतिक इच्छाओं और आसक्ति से मुक्ति प्रदान करना है।

शिक्षा को सृजनात्मकता और संस्कृति और सभ्यता की खोज के लिए ज्ञान प्रदान करना चाहिए।

शिक्षा को जीवन को सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और प्रासंगिक बनाना चाहिए।

ज्ञान के द्वारा संदेह, हठधर्मिता और अंधेरे को दूर करना चाहिए।

धर्म जीवन के हर पहलू को राष्ट्रीय, व्यक्तिगत, सामाजिक, और शिक्षाप्रद प्रक्रियाओं और प्रथाओं पर हावी करता है, इसलिए शिक्षा को धर्म के प्रति समर्पण किया जाना चाहिए।

7. निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि वेदांत दर्शन हिंदू दर्शन के महान विद्यालयों में से एक दर्शन है। वेदांत दर्शन एक एक विचारधारा है जिसमें जीवन से संबंधित ऐसे सवालों के उत्तर ढूंढने का प्रयास किया गया है जो उपनिषद में वर्णित है। उपनिषद में जो प्रश्न उठाए गए उनके उत्तरों को खोजने के लिए जो प्रयास किए गए वह वेदांत है। वेदांत में जो चीजें बदलती रहती हैं उन्हें माया कहा जाता है, जैसे, शरीर, मस्तिष्क आदि। अतः वे चीजें जो बदलती रहती हैं, एक तरह की माया है एक तरह का भ्रम है, वेदांता का यह मानना है कि ब्रह्म आपके स्वयं के अंदर है। वेदांत दर्शन और शिक्षा में गहरा संबंध है। वेदांत दर्शन आधारित शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मुक्ति अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करना है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए मनुष्य को अपना शारीरिक विकास एवं शुद्धिकरण करना होता है। हमारे जितने भी दर्शन हैं उन सब में शारीरिक विकास को बढ़ावा दिया गया है। नैतिक विकास के लिए मानसिक शुद्धता होना आवश्यक है। आध्यात्मिक विकास के लिए मनुष्य ऐसे कर्मों की ओर अग्रसर होगा जिसकी सहायता से वह ब्रह्मा से जुड़ सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. रंजय कुमार पटेल.; शैक्षिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में मीमांसा दर्शन की उपादेयता.; प्दज श्र दोतपज त्मे; 2021; 7 (3) पृष्ठ क्रमांक 39-44.

2. स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक (2018), वेदांत दर्शन, आईएसबीएनः 9788170772705
3. लाल, आर. बी., पलोड़, एस. (2012). शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग. आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
4. ओड़, एल. के. (2016). शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर. आईएसबीएनः 978-93-5131-223-9.
5. निगम, एस. (2008). भारतीय दर्शन. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली. आईएसबीएनः 978-81-208-2416-4.
6. उपाध्याय, डी. एस. (2007). मीमांसा दर्शनम्- सत्यधर्म प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सिन्हा, एच. पी. (2018). भारतीय दर्शन की रुपरेखा. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली. आईएसबीएन नंबर 978-8120821446.
8. पाठक आर.पी. और पांडेय अमिता भारद्वाज (2013) वेदांत शिक्षा-दर्शन, कनिष्क प्रकाशक, आईएसबीएनः 9788184575446